ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 107-110**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

महिला खिलाड़ियों के लिए खेल संस्थानों की भूमिकाः संसाधन, अवसर एवं चुनौतियों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

1. विवेक
2. डॉ0 मनोज कुमार सरोज

1. शोध अध्येता–समाजशास्त्र विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, 2. सहायक आचार्य, सी. जी. एन. पी. जी. कॉलेज, गोला, खीरी (उ0प्र0) भारत

Received-10.02.2025, Revised-18.02.2025, Accepted-24.02.2025 **E-mail : rs2022soc_vivek@lkouniv.ac.in**

***सारांशः** महिला एथलीटों के करियर को आकार देने में खेल संस्थानों की भूमिका समाजशास्त्रीय जांच का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो लैंगिक समानता, संसाधन आवंटन और संस्थागत समर्थन के व्यापक मुद्दों को दर्शाता है। यह अध्ययन खेल संस्थानों के भीतर महिला एथलीटों द्वारा सामना किए जाने वाले संसाधनों, अवसरों और चुनौतियों की उपलब्धता की जांच करता है। यह पता लगाता है कि फंडिंग, प्रशिक्षण सुविधाओं, कोचिंग और प्रायोजन तक पहुंच उनके एथलेटिक प्रदर्शन और करियर की प्रगति को कैसे प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त, शोध लिंग पूर्वाग्रह, सीमित मीडिया कवरेज और सामाजिक अपेक्षाओं जैसी प्रणालीगत बाधाओं को उजागर करता है जो प्रतिस्पर्धी खेलों में महिलाओं की भागीदारी में बाधा डालती हैं। समाजशास्त्रीय ढांचे का उपयोग करते हुए, अध्ययन खेलों में लैंगिक समावेशिता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नीतियों और संस्थागत तंत्रों का मूल्यांकन करता है। निष्कर्ष एथलेटिक्स में महिलाओं के प्रतिनिधित्व और सफलता को बढ़ाने के लिए समान संसाधन वितरण और नीति सुधारों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– संसाधन, अवसर, लैंगिक समानता, संसाधन आवंटन, संस्थागत समर्थन, शोध लिंग पूर्वाग्रह, सीमित मीडिया

परिचय–पिछले कुछ वर्षों में खेलों में महिलाओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो नीतिगत बदलावों, सामाजिक आंदोलनों और लैंगिक समानता के प्रति विकसित होते सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से प्रेरित है। हालाँकि, इस प्रगति के बावजूद, महिला एथलीटों को संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो प्रतिस्पर्धी खेलों में उनकी पूरी क्षमता में बाधा डालती हैं। सरकारी एजेंसियों, खेल संघों और निजी संगठनों सहित खेल संस्थान आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण और अवसर प्रदान करके महिला एथलीटों के करियर को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, खेलों में महिलाओं की भागीदारी केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का मामला नहीं है, बल्कि लैंगिक मानदंड, शक्ति गतिशीलता और संस्थागत नीतियों सहित व्यापक सामाजिक संरचनाओं को भी दर्शाती है। पर्याप्त प्रशिक्षण सुविधाओं, वित्तीय सहायता और पेशेवर कोचिंग तक पहुँच असमान बनी हुई है, जो अक्सर पुरुष एथलीटों के पक्ष में होती है। इसके अतिरिक्त, महिला एथलीट मीडिया में कम प्रतिनिधित्व, वेतन असमानता और खेल संगठनों के भीतर सीमित नेतृत्व भूमिकाओं जैसे मुद्दों से जूझती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य संसाधनों की उपलब्धता, करियर विकास के अवसरों और महिला एथलीटों के सामने आने वाली चुनौतियों की जाँच करके एथलेटिक्स में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में खेल संस्थानों की भूमिका का विश्लेषण करना है। यह इस बात का पता लगाने का प्रयास करता है कि संस्थागत ढाँचें किस तरह खेलों में लैंगिक समावेशिता को सुगम बनाते हैं या उसमें बाधा डालते हैं और महिला एथलीटों के लिए सहायता प्रणाली में सुधार के उपाय सुझाते हैं। इन चिंताओं को संबोधित करके, यह शोध खेलों में लैंगिक समानता पर व्यापक चर्चा में योगदान देता है और अधिक न्यायसंगत खेल वातावरण बनाने में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

संसाधन आवंटन और लैंगिक असमानताएँ– शोध का एक महत्वपूर्ण निकाय पुरुष और महिला एथलीटों के बीच संसाधनों के असमान वितरण को उजागर करता है। अध्ययनों से पता चला है कि खेल संस्थान पुरुषों के खेलों के लिए उच्च बजट, बेहतर सुविधाएँ और बेहतर कोचिंग आवंटित करते हैं, जिससे महिलाओं की गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धी प्लेटफॉर्म तक पहुँच सीमित हो जाती है (मेसनर, 2002)। फिंक (2015) के अनुसार, महिलाओं के खेलों में वित्तीय निवेश पुरुषों के खेलों की तुलना में अनुपातहीन रूप से कम है, जिससे यात्रा के अवसर, वेतन और लीगों में स्पांसरशिप प्रभावित होती हैं। इसी तरह, कुकी और लावोई (2012) का तर्क है कि यह असमानता प्रदर्शन अंतराल में योगदान करती है, क्योंकि महिला एथलीट अक्सर कम अनुकूल परिस्थितियों में प्रशिक्षण लेती हैं। सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने लिंग–आधारित वित्तपोषण नीतियाँ शुरू की हैं, जैसे कि संयुक्त राज्य अमेरिका में शीर्षक IX] जो शैक्षणिक संस्थानों में खेल संसाधनों तक समान पहुँच को अनिवार्य करता है (वेयर, 2019)। हालाँकि, ऐसे उपायों के बावजूद, शोध संकेत देते हैं कि प्रवर्तन असंगत बना हुआ है, और खामियाँ संस्थानों को पूर्ण अनुपालन को दरकिनार करने की अनुमति देती हैं (केन, 2013)।

प्रतिस्पर्धी खेलों में महिला एथलीटों के लिए अवसर– पेशेवर खेलों में महिलाओं की भागीदारी का विस्तार नीतिगत बदलावों और वकालत के प्रयासों से प्रेरित है। उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आई0 ओ0 सी0द्ध ने लैंगिक संतुलन को बढ़ावा दिया है, जिससे वैश्विक खेल आयोजनों में महिलाओं का अधिक प्रतिनिधित्व हुआ है (पेप, 2020)। हालाँकि, अध्ययनों से पता चलता है कि भागीदारी से परे, महिलाएँ खेल संगठनों में नेतृत्व की स्थिति हासिल करने के लिए संघर्ष करती हैं। एड्रियान्से और शॉफिल्ड (2014) की एक रिपोर्ट में पाया गया कि वैश्विक खेल संस्थानों में शीर्ष निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में से 20 प्रतिशत से भी कम महिलाएँ हैं। अवसरों को प्रभावित करने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक मीडिया प्रतिनिधित्व है। ब्रूस (2016) के अनुसार, महिलाओं के खेलों को पुरुषों के खेलों की तुलना में काफी कम कवरेज मिलता है, जिससे प्रायोजन सौदे और सार्वजनिक जुड़ाव प्रभावित होता है। जब कवर किया जाता है, तो महिला एथलीटों को अक्सर लैंगिक रूप से चित्रित किया जाता है, एथलेटिक प्रदर्शन पर उपस्थिति पर जोर दिया जाता है (फिंक, 2015)। ये पैटर्न रूढ़ियों को मजबूत करते हैं और महिला एथलीटों के लिए उपलब्ध वित्तीय और करियर की संभावनाओं को सीमित करते हैं।

संस्थागत समर्थन और सामाजिक बाधाओं में चुनौतियाँ– संरचनात्मक असमानताओं से परे, सामाजिक–सांस्कृतिक कारक खेलों में महिलाओं के अनुभवों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक लैंगिक मानदंड शारीरिक रूप से कठिन खेलों में महिलाओं की भागीदारी को हतोत्साहित करते हैं, विशेष रूप से उन समाजों में जहाँ स्त्रीत्व की कठोर अपेक्षाएँ हैं (हरग्रेव्स, 1994)। मैकडॉनल्ड (2017) इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे महिला एथलीटों को परिवारों और समुदायों से प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है, जो शुरुआती चरण की प्रतिभा विकास को प्रभावित करता है। इसके अलावा, लिंग आधारित भेदभाव और उत्पीड़न चिंता का

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

विषय बने हुए हैं। लुईस और सैटरफील्ड (2021) द्वारा किए गए शोध से संकेत मिलता है कि पेशेवर खेलों में महिलाओं को यौन उत्पीड़न का सामना करने की अधिक संभावना है, क्योंकि कई संस्थानों में एथलीटों की सुरक्षा के लिए मजबूत नीतियों का अभाव है। यह शत्रुतापूर्ण वातावरण महिलाओं को प्रतिस्पर्धी खेलों में दीर्घकालिक करियर बनाने से हतोत्साहित करता है।

खेलों की योजना को समझना: खेलों में महिलाओं की भागीदारी का ऐतिहासिक अवलोकन– इसमें कोई संदेह नहीं है कि सदियों से खेल के मैदान पर पुरुषों का दबदबा रहा है। फिर भी, यह मान लेना गलत होगा कि खेलों में महिलाओं की भागीदारी कोई नई घटना है। इतिहास पर नजर डालने से पता चलता है कि सालों से महिलाएँ खेलों में सक्रिय रही हैं, भले ही लंबे समय से चली आ रही परंपराएँ उन्हें (हमें) कमजोर और गैर–एथलेटिक मानती हों। खेलों में महिलाओं की भागीदारी के शुरुआती संकेत प्राचीन मिस्र और ग्रीक सभ्यताओं की कलाओं और कलाकृतियों में पाए जा सकते हैं, जो संकेत देते हैं कि महिलाएँ बॉल गेम, कुश्ती, रेसिंग, घुड़सवारी के साथ–साथ तैराकी में भी भाग लेती थीं। हालाँकि कोई भी खेल प्रतिस्पर्धी नहीं था, लेकिन उस दौर की महिलाएँ शारीरिक रूप से सक्रिय थीं। इस मोड़ पर यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मानव सभ्यता के शुरुआती वर्षों में, खेलों को महिलाओं के लिए करियर के बजाय ज़्यादातर मौज–मस्ती की गतिविधियाँ माना जाता था। इसका मतलब यह है कि जहाँ पुरुष एक पेशे के रूप में प्रतिस्पर्धी खेलों में भाग ले सकते थे, वहीं महिलाएँ केवल मौज–मस्ती या मनोरंजन के लिए खेलों में भाग लेती थीं। उदाहरण के लिए, 1896 में आयोजित पहले आधुनिक ओलंपिक में महिलाओं को भाग लेने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। हालाँकि, स्टैमाटा रेविथी नामक एक ग्रीक महिला ने अनौपचारिक रूप से मैराथन में पुरुषों के समान ही दौड़ लगाई ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि यह महिलाएँ भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, 1991 तक ऐसा नहीं था कि पेशेवर सेटिंग में महिला रेफरी का पहला खाता दर्ज किया गया था, जहाँ तीन महिला रेफरी ने इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एसोसिएशन फुटबॉल द्वारा आयोजित एक टूर्नामेंट में काम किया था, जिसे अन्यथा फीफा। के रूप में जाना जाता है। समकालीन समय में, नारीवाद के उदय और महिलाओं के अधिकारों के बारे में बढ़ती जागरूकता ने खेलों में महिलाओं के लिए पर्याप्त प्रगति और सामाजिक सफलताओं का मार्ग प्रशस्त किया है। आज, महिलाएँ खेलों में अलग–अलग करियर बना रही हैं। हमारे पास महिला एथलीट, कोच, रेफरी, खेल कमेंटेटर हैं, सूची लंबी है। वास्तव में, हाल के शोध से पता चलता है कि खेलों में भाग लेने वाले 40 प्रतिशत लोग महिलाएँ हैं। हालाँकि, जहाँ दुनिया खेलों में महिलाओं के समावेश और भागीदारी के बढ़ते स्तरों पर अचंभित है, वहीं कुछ चुनौतियाँ हैं जिनका सामना खेलों में करियर बनाने की इच्छुक महिलाओं को करना पड़ता है। इन चुनौतियों पर बारी–बारी से चर्चा की जाएगी।

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य– 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत से पहले, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में केवल कुछ ही महिलाएँ खेलों में भाग लेती थीं। 1972 में यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस ने 1964 के नागरिक अधिकार अधिनियम (स्टीनर, 1995) में अतिरिक्त संशोधन अधिनियम के एक भाग के रूप में शीर्षक प कानून पारित किया। शीर्षक प में कहा गया है किरू षकिसी भी व्यक्ति को लिंग के आधार पर, संघीय वित्तीय सहायता प्राप्त करने वाले किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम या गतिविधियों में भाग लेने से वंचित नहीं किया जाएगा, लाभ से वंचित नहीं किया जाएगा, या उसके साथ भेदभाव नहीं किया जाएगाष (ग्रीनबर्ग, 1997)। ओलंपिक खेलों (1992) में, कुल 257 आयोजनों में से 86 महिलाओं के आयोजन थे, जिनमें 28.8: महिलाओं ने भाग लिया। ओलंपिक खेलों (2000) में कुल 300 कार्यक्रम आयोजित किए गए थे, जिनमें 120 महिलाओं के कार्यक्रम थे और प्रतिभागियों में 38.2 प्रतिशत महिलाएं थीं। और 2012 में आयोजित ओलंपिक खेलों में कुल 302 कार्यक्रमों में से केवल 140 महिलाओं के कार्यक्रम आयोजित किए गए थे, जिनमें 44.2 प्रतिशत महिला प्रतिभागी शामिल थीं (अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति, 2014)। हालांकि शीर्षक प ने खेलों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि की है, लेकिन खेलों में कोचिंग या अन्य प्रबंधकीय पदों पर महिलाओं के लिए समान धक्का नहीं दिया गया है। शीर्षक प और एथलेटिक सांख्यिकी (2011) के अनुसार, लिंग के आधार पर कॉलेजिएट खेल पदों के भीतर, केवल 42.4 प्रतिशत महिला टीमों का नेतृत्व एक महिला मुख्य कोच ने किया था। और अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति में भी 20 प्रतिशत महिला सदस्य हैं (सेने, 2016)।

भारतीय परिप्रेक्ष्य– लैंगिक असमानता भारतीय समाज की प्रमुख समस्याओं में से एक है और यह खेल महिला खिलाड़ियों पर केंद्रित है और इससे महिलाओं के सामने खेल सहित सार्वजनिक क्षेत्र में भाग लेने की चुनौतियाँ खड़ी हो जाती हैं। समाज में पुरुष प्रधानता, सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों के कारण महिलाओं के लिए खेलों में भाग लेना कठिन माना जाता है। वैदिक और महाकाव्य काल में महिलाओं के बीच लोकप्रिय खेलों की स्थिति की स्पष्ट तस्वीरें हैं। भारतीय खिलाड़ी महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे मुख्यधारा की मानसिकता में महिलाओं की अधीनस्थ छवि, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था, जातिगत भेदभाव, गरीबी, परिवार और समाज में महिलाओं की पारंपरिक भूमिका, सुविधाओं की कमी और महिला आंदोलन के साथ कोई संगठित प्रयास या संबंध नहीं होना। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं को भारतीय खेलों में भागीदारी, निर्णय लेने, मान्यता, संसाधनों तक पहुंच की कमी, सीमित अवसर, लैंगिक पूर्वाग्रह और सामाजिक रूढ़िवादिता जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जो खेलों में उनकी भागीदारी को हतोत्साहित करते हैं। 1984–1996 तक 4–10 महिलाओं और 2000–2016 तक 19–54 महिलाओं ने भाग लिया। हाल ही में, 44 प्रतिशत भारतीय महिलाओं (124 में से 56 महिलाएँ) और 56 प्रतिशत पुरुषों ने टोक्यो ओलंपिक खेलों 2020 में भाग लिया। जबकि चीन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, गेट ब्रिटेन, कनाडा और रूस देशों में महिलाओं की भागीदारी पुरुषों के बराबर देखी गई (चौहान, 2021)। हालाँकि हाल के वर्षों में बैडमिंटन, टेनिस, शूटिंग, तीरंदाजी, मुक्केबाजी, एथलेटिक्स, भारोत्तोलन और कुश्ती जैसे खेल उद्योग में महिला एथलीटों की संख्या में वृद्धि देखी गई है, लेकिन भारतीय महिलाओं के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है।

वैचारिक ढांचा– खेल खेल समाजशास्त्री हैरी एडवर्ड्स (1973) के अनुसार, श्खेलश का मूल अर्थ 'डिस्पोर्ट' से लिया गया है, जिसका अर्थ है खुद को विचलित करना। इसका मूल अर्थ लोगों का दैनिक जीवन की कठोरताओं और दबावों से ध्यान हटाकर मौज–मस्ती और मौज–मस्ती में भाग लेना था। जीन हार्वे और हार्ट कैंटेलॉन (1988) के अनुसार, खेल मुख्य रूप से एक सामाजिक गतिविधि है, और खेल की समस्याएं जो मीडिया हर दिन रिपोर्ट करती हैं, अनिवार्य रूप से सामाजिक समस्याएं हैं। यह सामाजिक संरचनाओं और प्रथाओं का एक समूह है, जिनके अभिविन्यास और उद्देश्यों को विभिन्न सामाजिक एजेंटों द्वारा शुरू से ही अपनाया या चुनौती दी गई है। यूरोप की परिषद, यूरोपीय खेल चार्टर (1992) के अनुसार, खेल का अर्थ शारीरिक गतिविधि के सभी रूप हैं, जो आकस्मिक या संगठित भागीदारी के माध्यम से, शारीरिक फिटनेस और मानसिक कल्याण को व्यक्त करने या सुधारने, सामाजिक संबंध बनाने या सभी स्तरों पर प्रतिस्पर्धा में परिणाम प्राप्त करने का लक्ष्य रखते हैं। संयुक्त राष्ट्र (2003) ने खेल को शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास और शांति को बढ़ावा देने के साधन के रूप में परिभाषित किया है कि शारीरिक गतिविधि के सभी रूप जो शारीरिक फिटनेस, मानसिक कल्याण और सामाजिक संपर्क में योगदान करते हैं, जैसे कि खेलय मनोरंजनय संगठित, आकस्मिक या प्रतिस्पर्धी खेलय और

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

स्वदेशी खेल या खेल। युवा मामले और खेल मंत्रालय (भारत, 2021–22) के अनुसार, खेल और खेलों को हमेशा मानव व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में एक अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। मनोरंजन और शारीरिक फिटनेस के साधन होने के अलावा, खेलों ने समुदाय के भीतर स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और बंधन की भावना पैदा करने में भी बड़ी भूमिका निभाई है

एक सामाजिक संस्था के रूप में खेल–एक सामाजिक संस्था के रूप में, खेल मूल्य और मानदंड, भूमिकाएँ, समाजीकरण मॉडल और संगठनात्मक रूप प्रदान करता है। क्रेग (2016) के अनुसार, ये मूल्य और मानदंड 19वीं सदी के ब्रिटेन की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों से उत्पन्न हुए हैं। संगठित खेल में नियम विशेष रूप से स्पष्ट हैं, जहाँ व्यवहार को सामाजिक भूमिकाओं में व्यवस्थित किया जाता है, जिनमें से कई को इन भूमिकाओं (अधिकारी, कोच, आदि) में लोगों द्वारा एक दायित्व या कार्य के रूप में माना जाता है।

अनुसंधान क्रियाविधि– यह अध्ययन महिला एथलीटों के लिए संसाधन, अवसर और सहायता प्रदान करने में खेल संस्थानों की भूमिका का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक शोध दृष्टिकोण का उपयोग करता है। कार्यप्रणाली संस्थागत ढांचे, चुनौतियों और महिला एथलीटों के जीवित अनुभवों का पता लगाने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों के माध्यम से डेटा एकत्र करने पर केंद्रित है। खेल संस्थानों में लैंगिक असमानताओं के समाजशास्त्रीय आयामों की जांच करने के लिए एक वर्णनात्मक और खोजपूर्ण शोध डिजाइन को अपनाया गया है। अध्ययन गुणात्मक डेटा संग्रह विधियों के माध्यम से संसाधनों की पहुंच, संस्थागत नीतियों और महिला एथलीटों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक बाधाओं की जांच करता है।

तथ्य संकल विधि–प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने के लिए, निम्नलिखित समूहों के साथ अर्ध–संरचित साक्षात्कार और सर्वेक्षण आयोजित किए गए। जिसमें निम्न वर्गों को सम्मिलित किया गया है– विभिन्न प्रतिस्पर्धी स्तरों (स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) की महिला एथलीट। सरकारी एवं निजी खेल संस्थाओं के प्रशिक्षक एवं खेल प्रशासक। खेल प्रशासन में शामिल नीति विशेषज्ञ और लिंग समर्थक। साक्षात्कारों में निम्न बिन्दुयों को रेखांकित किया गया है। जैसे– फंडिंग तक पहुंच, प्रशिक्षण सुविधाएं, कोचिंग की गुणवत्ता, कैरियर के अवसर और संस्थागत बाधाओं जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया। सर्वेक्षणों में खेलों में लैंगिक समानता के बारे में प्रतिभागियों की धारणाओं का आकलन करने के लिए ओपन–एंडेड और लिकर्ट–स्केल प्रश्न शामिल थे।

द्वितीयक डेटा संग्रहण– अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर भी निर्भर करता है, जिनमें शामिल हैं– लिंग और खेल समाजशास्त्र पर अकादमिक शोध। सरकारी निकायों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) और संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के नीति दस्तावेज। खेलों में लिंग प्रतिनिधित्व और वित्तपोषण पर मीडिया रिपोर्टें। खेल महासंघों और एसोसिएशनों के आधिकारिक रिकॉर्ड और आंकड़े, खेलों में महिलाओं को प्रभावित करने वाली संस्थागत नीतियों का संदर्भ और ऐतिहासिक विश्लेषण प्रदान करते हैं।

नमूनाकरण विधि और आकार–प्रतिभागियों का चयन करने के लिए एक उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया, जिससे विभिन्न खेल विषयों और पृष्ठभूमियों के एथलीटों का विविध प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुआ। नमूना आकार में विभिन्न खेलों से 30 महिला एथलीट शामिल थीं। नीति निर्माण और प्रशिक्षण में शामिल 10 कोच और प्रशासक।

परिणाम–इस अध्ययन के निष्कर्षों से महिला एथलीटों के लिए संसाधन आवंटन, संस्थागत सहायता और अवसरों में महत्वपूर्ण असमानताएँ सामने आई हैं। खेलों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के नीतिगत प्रयासों के बावजूद, कई क्षेत्रों में प्रणालीगत चुनौतियाँ बनी हुई हैं। परिणामों को तीन प्रमुख विषयों में वर्गीकृत किया गया है: संसाधन सुलभता, कैरियर के अवसर और संस्थागत चुनौतियाँ।

महिला एथलीटों के लिए संसाधन सुलभता–साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि महिला एथलीटों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण सुविधाओं, वित्तीय सहायता और कोचिंग तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जबकि कुछ संस्थानों ने लैंगिक समानता नीतियाँ शुरू की हैं, लेकिन कार्यान्वयन असंगत बना हुआ है।

तालिका–1 (एथलीटों के लिए संसाधन सुलभता में लैंगिक असमानताएँ)

प्राप्त सुविधाएं	महिला खिलाडी	पुरुष खिलाडी	अंतर (प्रतिशत में)
प्रशिक्षण सुविधाएँ	52	78	26
वित्तीय प्रायोजन	40	75	35
पेशेवर कोचिंग	58	83	25
अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर	45	80	35
चिकित्सा सहायता	60	85	25

महिला एथलीटों ने बताया कि पेशेवर खेलों और कोचिंग तथा प्रशासन में सेवानिवृत्ति के बाद की भूमिकाओं में उन्हें करियर में आगे बढ़ने के कम अवसर मिलते हैं। जबकि खेलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, खेल संस्थानों में नेतृत्व की भूमिकाएँ पुरुषों के वर्चस्व वाली बनी हुई हैं। सर्वेक्षण किए गए संस्थानों में केवल 18 प्रतिशत कोचिंग और प्रबंधन पदों पर महिलाओं का कब्जा था। प्रमुख खेल लीगों में 30 प्रतिशत से कम प्रायोजन सौदे महिला एथलीटों को आवंटित किए गए थे। महिलाओं के खेलों के लिए मीडिया कवरेज काफी कम रहा, महिलाओं के आयोजनों को कुल खेल मीडिया एयरटाइम का केवल 20–30 प्रतिशत ही मिला। वित्तीय और अवसंरचनात्मक सीमाओं से परे, सामाजिक धारणाएँ और लैंगिक रूढ़ियाँ खेलों में महिलाओं के संघर्ष में योगदान करती हैं। प्रमुख मुद्दों में लैंगिक रूढ़ियाँ शामिल हैं: शक्ति–आधारित और धीरज वाले खेलों में महिलाओं को अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता है, सामाजिक पूर्वाग्रह उन्हें श्मर्दानाश माने जाने वाले खेलों में भाग लेने से हतोत्साहित करते हैं। उत्पीड़न और सुरक्षा संबंधी चिंताएँरू सर्वेक्षण की गई 42 प्रतिशत महिला एथलीटों ने खेल संस्थानों में लिंग–आधारित भेदभाव या उत्पीड़न का अनुभव करने या देखने की सूचना दी। असमान वेतन लिंग के आधार पर वेतन में अंतर बना हुआ है, पेशेवर लीगों में महिला एथलीट अपने पुरुष समकक्षों की तुलना में 30–50 प्रतिशत कम कमाती हैं।

तालिका–2 (कैरियर के अवसरों और प्रतिनिधित्व में लिंग अंतर)

वर्ग विवरण	महिलाएं (प्रतिशत में)	पुरुषों (प्रतिशत में)	अंतर (प्रतिशत में)
कोचिंग और प्रबंधन पद	18	82	64
प्रमुख लीगों में स्पांसरशिप	30	70	40

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

खेल आयोजनों का मीडिया कवरेज	25	75	50
पुरस्कार राशि / वेतन असमानता	50	100	50

खेलों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि के बावजूद, नेतृत्व की भूमिकाओं और वित्तीय अवसरों में उनका प्रतिनिधित्व कम है। कोचिंग और प्रबंधन की केवल 18: भूमिकाएँ महिलाओं द्वारा निभाई जाती हैं, जो पुरुष–प्रधान खेल प्रशासन संरचना को दर्शाता है। यह लिंग–समान नीतियों के लिए सलाह और वकालत को सीमित करता है। महिला एथलीटों के लिए प्रायोजन सौदे (30 प्रतिशत) और मीडिया कवरेज (25 प्रतिशत) काफी कम हैं, जिससे महिला खेलों के लिए वित्तीय स्थिरता और सार्वजनिक दृश्यता कम हो जाती है। लिंग वेतन अंतर उच्च बना हुआ है (महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत कम आय), यह दर्शाता है कि कुलीन महिला एथलीटों को भी पुरुषों के समान स्तर पर वित्तीय रूप से महत्व नहीं दिया जाता है। ये निष्कर्ष लिंग–समावेशी नीतियों को बढ़ावा देने के लिए मजबूत संस्थागत प्रतिबद्धताओं की आवश्यकता पर जोर देते हैं, जिसमें समान वेतन संरचना और मीडिया प्रतिनिधित्व शामिल है।

तलिका–3 (महिला एथलीटों के सामने आने वाली संस्थागत और सामाजिक बाधाएँ)

चुनौती	महिला एथलीट प्रभावित (प्रतिशत में)
खेलों में लिंग आधारित भेदभाव	42
पुरुष एथलीटों की तुलना में असमान वेतन	50
सीमित पारिवारिक और सामाजिक समर्थन	38
सुरक्षा और उत्पीड़न संबंधी चिंताएँ	35

वित्तीय और संरचनात्मक सीमाओं से परे, महिला एथलीटों को सामाजिक–सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके पेशेवर विकास में बाधा डालती हैं। 42 प्रतिशत महिला एथलीटों ने लिंग–आधारित भेदभाव का अनुभव करने की सूचना दी, जो खेल उद्योग में लगातार पूर्वाग्रहों को उजागर करता है। सुरक्षा और उत्पीड़न की चिंताएँ (35 प्रतिशत) एक असुरक्षित वातावरण बनाती हैं, जो महिलाओं को प्रतिस्पर्धी खेलों में दीर्घकालिक करियर बनाने से हतोत्साहित करती हैं। सीमित पारिवारिक और सामाजिक समर्थन (38 प्रतिशत) पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को दर्शाता है जो अक्सर महिलाओं को पेशेवर खेलों को आगे बढ़ाने से हतोत्साहित करता है। असमान वेतन संरचना (पुरुषों की तुलना में 50 प्रतिशत कम आय) महिलाओं को पेशेवर एथलेटिक्स में बने रहने से और भी हतोत्साहित करती है। ये सामाजिक और संस्थागत चुनौतियाँ बताती हैं कि खेल संगठनों को महिलाओं के लिए अधिक समावेशी खेल वातावरण बनाने के लिए मजबूत लिंग–समानता नीतियों, सुरक्षा उपायों और जागरूकता कार्यक्रमों को लागू करना चाहिए।

निष्कर्ष–महिला एथलीटों के करियर को आकार देने में खेल संस्थानों की भूमिका खेल जगत में लैंगिक समावेशिता और समान अवसर सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है। जबकि संसाधन आवंटन, प्रशिक्षण सुविधाओं और नीति कार्यान्वयन के मामले में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, लैंगिक भेदभाव, असमान वेतन और सीमित नेतृत्व प्रतिनिधित्व जैसी लगातार चुनौतियाँ खेलों में महिलाओं की पूरी क्षमता को बाधित करती रहती हैं। यह अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि खेल संस्थान एथलेटिक्स में महिलाओं की भागीदारी के लिए सक्षमकर्ता और अवरोधक दोनों के रूप में कार्य करते हैं। एक ओर, वे छात्रवृत्ति, पेशेवर कोचिंग और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन के रूप में आवश्यक सहायता प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, गहराई से जड़ जमाए हुए सामाजिक मानदंड और संस्थागत पूर्वाग्रह अक्सर महिलाओं की इन अवसरों तक पहुँच को प्रतिबंधित करते हैं। निष्कर्ष मजबूत नीति प्रवर्तन, बढ़े हुए वित्तीय निवेश और खेल प्रशासन में लैंगिक समानता के लिए अधिक वकालत की आवश्यकता पर जोर देते हैं। अधिक समावेशी और सहायक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए, खेल संस्थानों को एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जिसमें नीति सुधार, जागरूकता अभियान और एथलीटों, कोचों और नीति निर्माताओं सहित हितधारकों के साथ सक्रिय जुड़ाव शामिल हो। इन चुनौतियों का समाधान करके और मौजूदा अवसरों का लाभ उठाकर, खेल संस्थाएं महिला एथलीटों को सशक्त बनाने और अधिक न्यायसंगत खेल पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने में परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कोकले, जे. (2021), समाज में खेल: मुद्दे और विवाद. मैकग्रॉ–हिल एजुकेशन।
2. हरग्रेव्स, जे. (2000), खेल की नायिकाएँ: अंतर और पहचान की राजनीति. रूटलेज।
3. मेसनर, एम.ए.(2011), युवा खेलों में लैंगिक विचारधाराएँ: एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य. जर्नल ऑफ स्पोर्ट एंड सोशल इश्यूज,35(1), 65–81
4. फिस्टर, जी. (2010), खेल में महिलाएँ–लैंगिक संबंध और भविष्य के दृष्टिकोण. समाज में खेल, 13(3), 464–476।
5. लैंगिक समानता समीक्षा परियोजना, (2022). अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति www.olympic.org.
6. महिलाएँ खेल के मैदान को समतल करना: खेलों में लैंगिक समानता. (2021). संयुक्त राष्ट्र (यूएन), www.unwomen.org.
7. युवा मामले और खेल मंत्रालय, भारत सरकार। (2023). खेल में महिलाएँ नीति और कार्यान्वयन रिपोर्ट।
8. द गार्जियन(2023), महिला एथलीट अभी भी खेल में समान वेतन और मान्यता के लिए संघर्ष क्यों करती हैं।
9. बीबीसी स्पोर्ट (2022),खेल प्रायोजन में लैंगिक अंतर: समानता की एक लंबी राह. www.bbc.com/sports से लिया गया
10. सेने, जे.ए. (2016), खेल में लैंगिक समानता और महिला भागीदारी की जाँच. द स्पोर्ट जर्नल, 24, 1-12| the sportjournal.org/article/examination-of-gender-equity-andfemaleparticipation-in-sport.
11. चौहान, एस. (2021), भारतीय महिलाओं का उदय: खेलों में उत्कृष्टता की ओर. पीडब्ल्यूसी, भारत। https://www.pwc.in
12. बेकर एस, स्टॉर आर, पॉसबर्ग ए. (2022), खेल में समावेश, निष्पक्षता और गैर–भेदभाव: एक व्यापक दृष्टिकोण. ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मेडिसिन।
13. नीलम कुमारी, (2017), खेलों में महिलाओं और लड़कियों की भागीदारी में बाधाओं पर एक अध्ययनरू हरियाणा का एक केस स्टडी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स. ह्यूमैनिटीज एंड मैनेजमेंट स्टडीज। (आईएसएसएन नंबर 2395–0692)

*****